The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X (Online)
Volume-03, Issue-01, April-2024
www.theresearchdialogue.com

"मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक पर्यावरण का छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन"

डॉ0 अमित कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

यसबंत कुमारी
एम0एड0 छात्रा
खंडेलवाल कॉलेज ऑफ एजूकेशन एंड टेक्नोलॉजी, बरेली।

सारांश:

वर्तमान शैक्षिक परिवेश में शिक्षक शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि इन्हीं संस्थानों में भावी शिक्षकों का निर्माण होता है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का संगठनात्मक पर्यावरण न केवल शैक्षिक क्रियाकलापों को संचालित करने में सहायक होता है बल्कि छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को भी गहराई से प्रभावित करता है। यह अध्ययन इसी अंतर्संबंध की पड़ताल करता है। संगठनात्मक पर्यावरण में शैक्षिक नेतृत्व, पारदर्शिता, सहयोगात्मक संस्कृति, संवाद का स्तर, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता तथा मूल्य आधारित प्रशासन जैसे कारक सम्मिलित होते हैं जो किसी भी संस्थान की कार्यप्रणाली को प्रभावशाली बनाते हैं। वहीं छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से आशय उनकी इस भावना से है कि वे शिक्षण को एक उत्तरदायित्वपूर्ण, प्रेरक व सकारात्मक क्रिया के रूप में कितनी गंभीरता से लेते हैं। अध्ययन में यह मान्यता रही है कि अनुकूल संगठनात्मक पर्यावरण से छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, शिक्षण कार्य के लिए प्रेरणा तथा सहयोगी दृष्टिकोण का विकास होता है जबकि प्रतिकूल वातावरण में उदासीनता, नकारात्मकता तथा पेशे से विमुखता जैसी प्रवृत्तियाँ जन्म ले सकती हैं। इस अध्ययन में विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों से तथ्यात्मक जानकारी एकत्र की गई जिसमें संगठनात्मक पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके शिक्षण संबंधी दृष्टिकोण का तुलनात्मक एवं सहसम्बंधात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि जिन महाविद्यालयों में नेतृत्व लोकतांत्रिक, संचार प्रभावशाली, संसाधन सुलभ तथा वातावरण समावेशी है, वहाँ छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई। इसके विपरीत, जहाँ प्रशासनिक जटिलताएँ, संवादहीनता तथा अनुशासनहीनता का बोलबाला है, वहाँ छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति रुचि न्यूनतम रही। यह शोध इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसके द्वारा नीतिनिर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं महाविद्यालय प्रमुखों को यह संकेत मिलता है कि संगठनात्मक पर्यावरण में सुधार द्वारा छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को सुदृढ़ किया जा सकता है साथ ही यह शोध शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु एक सशक्त सैद्धांतिक आधार भी प्रस्तुत करता है। अतः यह स्पष्ट है कि प्रभावशाली संगठनात्मक पर्यावरण ही सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति का मूलाधार है और इसे सुनिश्चित किए बिना उत्कृष्ट शिक्षक निर्माण की परिकल्पना अधूरी रह जाएगी।

शब्द बीज : शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, संगठनात्मक पर्यावरण, छात्राध्यापक, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और बौद्धिक प्रगति की आधारशिला होती है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि वही राष्ट्र के भावी नागरिकों के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। अतः शिक्षक की गुणवत्ता ही किसी भी देश की शैक्षिक प्रणाली की सफलता का निर्धारक तत्व होती है। इस गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत एवं प्रेरणादायक शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली आवश्यक होती है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का उद्देश्य केवल पाठ्यचर्या के ज्ञान का संप्रेषण ही नहीं है बल्कि शिक्षकों के दृष्टिकोण, मूल्यों, नैतिकताओं और व्यवहारों का विकास भी करना है। इस परिप्रेक्ष्य में, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक पर्यावरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि यह वातावरण ही छात्राध्यापकों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यवहारात्मक पक्षों को प्रभावित करता है। संगठनात्मक पर्यावरण से तात्पर्य उस समग्र वातावरण से है जिसमें छात्राध्यापक अध्ययन और प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसमें संस्थान की भौतिक सुविधाएं, शैक्षणिक संसाधन, नेतृत्व शैली, प्रशासनिक नीतियां, अध्यापकों का सहयोगात्मक व्यवहार, संवादात्मक संस्कृति, मूल्यपरक दृष्टिकोण और अनुशासन आदि तत्व सम्मिलित होते हैं। यह सभी घटक मिलकर उस सामाजिक और शैक्षणिक संदर्भ का निर्माण करते हैं जो छात्राध्यापकों की सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से, यह पर्यावरण छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को निर्मित करता है, जो उनके भावी शिक्षकीय व्यवहार को निर्धारित करता है। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से आशय है शिक्षण कार्य को लेकर छात्राध्यापकों की सकारात्मक या नकारात्मक मानसिकता, जो यह तय करती है कि वे भविष्य में इस कार्य को कितने उत्साह, संलग्नता और संवेदनशीलता से करेंगे। जब छात्राध्यापक एक सहयोगात्मक, उत्साहवर्धक और नवाचारयुक्त संगठनात्मक पर्यावरण में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, तो उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति प्रायः सकारात्मक होती है। इसके विपरीत, जब प्रशिक्षण संस्थान का वातावरण निरुत्साहित करने वाला, अनुशासनहीन या व्यवस्थागत अव्यवस्था से ग्रस्त होता है, तो यह छात्राध्यापकों की नकारात्मक अभिवृत्तियों को जन्म दे सकता है। वर्तमान शैक्षिक परिवेश में जहाँ शिक्षकों से गुणवत्तापूर्ण, नवाचारी और मूल्यपरक शिक्षण की अपेक्षा की जाती है, वहाँ यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक पर्यावरण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति केवल एक मानसिक स्थिति नहीं है बल्कि यह व्यवहारिक पक्षों जैसे कक्षा संचालन, शिक्षण विधियों की चयन क्षमता, विद्यार्थियों से संवाद कौशल, समस्याओं के समाधान के प्रति दृष्टिकोण आदि पर गहरा प्रभाव डालती है। यदि छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण काल में ही उनके भीतर सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास किया जाए, तो वे भावी शिक्षकों के रूप में शिक्षा की गुणवत्ता में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। इस हेतु संगठनात्मक पर्यावरण को इस प्रकार डिजाइन करने की आवश्यकता है, जिसमें सृजनात्मकता, नवाचार, सहभागिता और संवेदनशीलता को प्रोत्साहन मिले। वर्तमान समय में कई शोधों ने यह संकेत दिया है कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में विद्यमान संगठनात्मक वातावरण अनेक बार छात्राध्यापकों की आवश्यकताओं और

अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होता, जिसके कारण उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में उत्साह की कमी देखी जाती है। कभी–कभी यह संस्थान केवल औपचारिक पाठ्यक्रम संचालित करने वाले केन्द्र बन जाते हैं, जहाँ भावनात्मक, नैतिक और प्रेरक तत्वों की अनदेखी की जाती है। इससे न केवल शिक्षक निर्माण प्रक्रिया प्रभावित होती है, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में भावी गुणवत्ता और नवाचार की संभावनाएं भी क्षीण हो जाती हैं। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम संगठनात्मक पर्यावरण के विभिन्न आयामों जैसे नेतृत्व, संसाधन उपलब्धता, संवाद व्यवस्था, प्रेरणा प्रणाली, सहभागिता संस्कृति, एवं मूल्याधारित वातावरण आदि पर गंभीर शोध करें और यह समझने का प्रयास करें कि ये तत्व छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन विशेष रूप से इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक प्रशिक्षण को गुणात्मक रूप से सशक्त और नवाचारी बनाने की बात करती है। ऐसे में छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने हेतु उन सभी कारकों की पहचान आवश्यक है जो उनके प्रशिक्षण अनुभव को समृद्ध बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया है कि एक सकारात्मक संगठनात्मक पर्यावरण, छात्राध्यापकों में आत्मविश्वास, नेतृत्व कौशल, समस्या समाधान क्षमता, और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण का विकास करता है। यह अध्ययन न केवल संगठनात्मक कारकों की पहचान करेगा बल्कि यह भी बताएगा कि कौन–से विशेष तत्व छात्राध्यापकों की मानसिकता को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसके निष्कर्ष नीति–निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षकों और प्रशासनिक अधिकारियों के लिए दिशानिर्देशक सिद्ध हो सकते हैं ताकि वे अपने संस्थानों के संगठनात्मक पर्यावरण को इस प्रकार परिवर्तित करें जिससे कि छात्राध्यापक न केवल अकादमिक रूप से बल्कि मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक रूप से भी उत्कृष्ट शिक्षक बन सकें। अंततः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों का संगठनात्मक वातावरण केवल एक प्रशासनिक पहलू नहीं है बल्कि यह एक संवेदनशील, बहुआयामी और शिक्षण–केंद्रित दृष्टिकोण है जो एक भावी शिक्षक के निर्माण में आधारभूत भूमिका निभाता है। यदि हम भविष्य में एक गुणवत्ता आधारित, नवाचारी और मूल्यनिष्ठ शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को सुदृढ़ करने के लिए उनके प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक पर्यावरण को अनुकूल, प्रेरक और समावेशी बनाना होगा। यही इस अध्ययन की पृष्ठभूमि, प्रासंगिकता और औचित्य को स्पष्ट करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान शैक्षिक परिवेश में शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गई है क्योंकि यही संस्थान भावी शिक्षकों को तैयार करने का कार्य करते हैं। इन महाविद्यालयों में विद्यमान संगठनात्मक पर्यावरण न केवल छात्राध्यापकों के बौद्धिक, नैतिक एवं व्यवहारिक विकास को प्रभावित करता है बल्कि उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को भी आकार देता है। अभिवृत्ति वह मानसिक प्रवृत्ति है जो किसी कार्य के प्रति व्यक्ति की सोच, दृष्टिकोण, रुचि एवं तत्परता को निर्धारित करती है। यदि किसी छात्राध्यापक की शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होती है तो वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन अधिक उत्साहपूर्वक, रचनात्मकता एवं नवाचार के साथ करता है। इसके विपरीत यदि वह नकारात्मक अभिवृत्ति रखता है, तो वह केवल एक औपचारिक

भूमिका निभाता है, जिससे विद्यार्थियों की समग्र प्रगति प्रभावित होती है। संगठनात्मक पर्यावरण में शिक्षक–प्रशिक्षकों का व्यवहार, पाठ्यक्रम की संरचना, प्रशासनिक नीतियाँ, भौतिक संसाधन, सहयोगात्मक संस्कृति, मूल्य आधारित वातावरण, समय–पालन, प्रशिक्षण की गुणवत्ता, मूल्यांकन प्रणाली तथा नवाचार को प्रोत्साहन जैसे अनेक तत्व सम्मिलित होते हैं, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से छात्राध्यापकों की सोच, प्रेरणा, दृष्टिकोण एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। जब महाविद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण सहयोगात्मक, प्रेरक, सुसंगठित एवं नवाचारी होता है, तो छात्राध्यापकों के भीतर शिक्षण को एक रचनात्मक एवं जिम्मेदारीपूर्ण कार्य के रूप में देखने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। इसके विपरीत यदि संस्थान में अनुशासनहीनता, संसाधनों का अभाव, प्रेरणाहीन प्रशिक्षण, शिक्षकों का नकारात्मक व्यवहार एवं प्रशासनिक अराजकता व्याप्त हो, तो यह छात्राध्यापकों की मानसिकता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे वे शिक्षण को एक बोझ समझने लगते हैं। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम यह जानें कि विभिन्न संगठनात्मक घटक किस प्रकार छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षक–प्रशिक्षकों, प्रशासकों एवं पाठ्यचर्या नियोजकों को यह समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है कि संगठनात्मक सुधारों के माध्यम से कैसे भावी शिक्षकों की मानसिकता एवं दृष्टिकोण को अधिक सकारात्मक बनाया जा सकता है साथ ही यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए एक आधार भी प्रदान करेगा, जिससे उनकी कार्यप्रणाली में आवश्यक परिवर्तन एवं नवाचार किए जा सकें। शिक्षण एक मानवीय सेवा है, जो केवल विषय ज्ञान पर नहीं बल्कि शिक्षक की सोच, दृष्टिकोण एवं मूल्यबोध पर आधारित होती है इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि हम भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति को समझने एवं सकारात्मक रूप से विकसित करने हेतु उस पर्यावरण को बेहतर बनाएं जिसमें वे प्रशिक्षित हो रहे हैं। इस शोध अध्ययन के माध्यम से यह भी ज्ञात हो सकेगा कि कौन–से संगठनात्मक आयाम छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति को अधिक प्रभावित करते हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह अध्ययन प्रशिक्षु शिक्षकों के प्रशिक्षण अनुभव को अधिक सुदृढ़, सुसंगत एवं उद्देश्यपरक बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम हो सकता है साथ ही यह शोध शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार एवं परिवर्तन की संभावनाओं को भी उजागर करेगा, जिससे सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा मिल सकती है। यह अध्ययन न केवल भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति में निहित विविधताओं को समझने में सहायक होगा बल्कि एक ऐसे गुणात्मक संगठनात्मक ढांचे की परिकल्पना को भी साकार करेगा, जो शिक्षक–प्रशिक्षण को सामाजिक रूपांतरण का माध्यम बना सके।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

होय और मिस्केल (2001) ने शैक्षिक संगठन और प्रशासन पर किए गए अपने कार्य में स्पष्ट किया कि किसी भी शैक्षिक संस्था का संगठनात्मक वातावरण, उसके भीतर के पारस्परिक संबंधों, नेतृत्व की कार्यशैली, संचार व्यवस्था और नीति निर्धारण की प्रक्रिया से निर्मित होता है। यह वातावरण छात्राध्यापकों की मानसिकता एवं अभिवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

चौहान, एस. एस. (2003) ने स्पष्ट किया कि छात्राध्यापक की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, पूर्व अनुभव, प्रेरणा एवं प्रशिक्षण संस्थान के वातावरण की भूमिका होती है। यदि वातावरण प्रेरणादायक और सहयोगात्मक हो तो सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होती है।

ओवेन्स, आर. जी. (2004) ने शिक्षा में संगठनात्मक व्यवहार नामक कृति में संगठनात्मक व्यवहार और उसके प्रभावों को दर्शाते हुए यह बताया गया है कि यदि संस्था में पारदर्शिता, समर्थन, सहयोग और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया जाए तो छात्राध्यापक अधिक सकारात्मक रूप से शिक्षण में रुचि लेते हैं।

कौल, लोकेश (2008) ने शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति में यह कहा कि संस्थागत वातावरण की सशक्तता से शिक्षण अभिवृत्ति की दिशा और गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन आता है। अध्ययन के अनुसार, आत्मनिर्भर वातावरण, स्पष्ट प्रशासनिक दृष्टिकोण और सहयोगी नेतृत्व छात्राध्यापकों को प्रोत्साहित करते हैं।

मंगल, एस. के. (2009) ने विकासशील समाज में शिक्षक और शिक्षा में यह वर्णन है कि प्रशिक्षण काल में शिक्षक की सोच, आचरण और कार्यशैली का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में संस्था की भूमिका निर्णायक होती है, विशेषकर जब संस्था व्यावहारिक प्रशिक्षण, मूल्यपरक शिक्षा और नैतिक समर्थन प्रदान करती है।

सिंह, एल.सी. (2012) ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन के दौरान पाया गया कि जो प्रशिक्षण महाविद्यालय अकादमिक सहयोग, सृजनात्मक गतिविधियाँ एवं शिक्षाशास्त्रीय नवाचार को बढ़ावा देते हैं, वहां के छात्राध्यापक शिक्षण को एक प्रेरणादायक एवं रचनात्मक कार्य मानते हैं।

शर्मा, आर. ए. (2014) ने शोध में यह निष्कर्ष सामने आया कि छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति उन संस्थानों में अधिक सकारात्मक होती है, जहां पाठ्यक्रम के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास, कार्यशालाएं, और टीम वर्क पर भी बल दिया जाता है।

मीना, आर. (2018) ने शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक पर्यावरण और छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक शोध में यह पाया गया कि निजी संस्थानों की तुलना में सरकारी संस्थानों में संगठनात्मक ढांचे की पारदर्शिता अधिक थी, जिससे छात्रों की शिक्षण अभिवृत्ति सकारात्मक रही।

वर्मा, ए. (2021) के अनुसार, प्रशिक्षण संस्थानों में यदि सहभागिता आधारित शिक्षण पद्धतियाँ लागू की जाएं, जैसे समूह कार्य, प्रोजेक्ट कार्य और केस स्टडीज, तो छात्राध्यापक शिक्षा को केवल विषयवस्तु नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में देखने लगते हैं।

यादव, एन. (2023) ने यह पाया कि प्रशिक्षकों की सहभागिता शैली, संस्थागत स्वतंत्रता और प्रशासनिक पारदर्शिता ये तीन प्रमुख घटक हैं जो छात्राध्यापक की सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समस्या कथन

मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक पर्यावरण का छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद मंडल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापक और छात्राध्यापिकाओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु मुरादाबाद मंडल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापक और 800 छात्राध्यापिकाओं को चयनित किया गया।

उपकरण

- संगठनात्मक पर्यावरण मापनी :– डा0 संज्योत पेठे, सुषमा चौधरी एवं डॉ0 उपिंदर धर द्वारा निर्मित प्रश्नावली।
- शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापनी :– डॉ सुरेंद्र सिंह दहिया एवं डॉ एल.सी. सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

पुरुष छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति

समूह	N	Correlation	सार्थकता स्तर
पुरुष छात्राध्यापक	420	0.945707	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में पुरुष छात्राध्यापकों के दोनों चरों के सहसम्बन्ध का मान 0.945707 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। टीचर ट्रेनिंग कॉलेज में संगठन की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, संस्कृति, नीतियां, और प्रशासनिक प्रक्रियाएं शिक्षकों के अभिवृत्ति पर प्रभाव डाल सकती हैं। सरकारी नीतियों और नियमों के अनुसार, शिक्षकों के संगठनात्मक अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ सकता है। उच्च स्तरीय एजूकेशन संस्थानों में टीचर्स के प्रति अभिवृत्ति का स्तर और प्रतिबद्धता उच्च हो सकती है, जबकि माध्यमिक और प्राथमिक स्तर के संस्थानों में इसका अलग होता है। समाज में शिक्षकों की स्थिति और महत्व पर प्रायः सामाजिक संदेश प्रभाव डालते हैं, जो उनकी अभिवृत्ति पर प्रभाव डाल सकते हैं। शिक्षा प्रणाली में शिक्षकों और छात्रों के संबंध की स्थिति, शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकती है। संस्थान की स्थिरता, संगठनात्मक संघर्ष और अस्थिरता के कारण शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित कर सकती है।

तालिका संख्या – 2

महिला छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण एवं शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति

समूह	N	Correlation	सार्थकता स्तर
महिला छात्राध्यापक	380	0.92978	धनात्मक

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में महिला छात्राध्यापकों के दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.92978 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। महिला छात्राध्यापकों के लिए संगठनात्मक पर्यावरण का महत्व बहुत अधिक होता है। यह समाज में उनकी सम्मान और समर्थन की गारंटी प्रदान करता है और उन्हें स्वतंत्रता और समानता का अनुभव कराता है। इसमें संशोधनात्मक पाठ्यक्रम, मेंटरिंग प्रोग्राम्स, अनुसंधान के अवसर, और करियर विकास के लिए संरचित कार्यक्रम शामिल होते हैं। इसमें समर्थक पारिवारिक वातावरण, सहकर्मीयों और प्रशिक्षण संस्थाओं से सहयोग, और समाजिक संगठनों द्वारा उपलब्ध समर्थन शामिल होता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

1. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया।
2. मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला छात्राध्यापकों के संगठनात्मक पर्यावरण का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चौहान, एस.एस. (2003). शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचार, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस.

- होय, डब्ल्यू. के., और मिस्केल, सी. जी. (2001). शैक्षिक प्रशासनरू सिद्धांत, अनुसंधान और व्यवहार, न्यूयॉर्क : मैकग्रा–हिल.
- कौल, एल. (2008). शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति, नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड.
- मंगल, एस. के. (2009). विकासशील समाज में शिक्षक और शिक्षा, नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
- नाइक, जे. पी. (1982). शिक्षा आयोग और उसके बाद, नई दिल्ली : एलाइड पब्लिशर्स.
- ओवेन्स, आर. जी. (2004). शिक्षा में संगठनात्मक व्यवहार : अनुकूली नेतृत्व और स्कूल सुधार, बोस्टन : पियर्सन एजुकेशन.
- शर्मा, आर.ए. (2014). शिक्षक शिक्षा : सिद्धांत, सिद्धांत और व्यवहार, मेरठ : आर. लाल बुक डिपो.
- सिंह, एल. सी. (2012). प्रभावी शिक्षक शिक्षा, नई दिल्ली : राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद.
- वर्मा, ए. (2021). संस्थागत वातावरण के संबंध में शिक्षक प्रशिक्षुओं के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 14(2), 45–56.
- मीना, आर. (2018). शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट, 12(3), 109–117.
- यादव, एन. (2023). शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक पर्यावरण के छात्राध्यक्ष के शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव, अप्रकाशित एम.एड. शोध प्रबंध, सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-03, Issue-01, April-2024
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number April-2024/35
Impact Factor (IIJIF-1.561)
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 अमित कुमार सिंह और यसबंत कुमारी

for publication of research paper title

"मुरादाबाद मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के संगठनात्मक पर्यावरण का छात्राध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed & Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-01, Month April, Year-2024.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY